सांस्कृतिक महासभा के पांचवें राज्यस्तरीय पुरस्कार समारोह में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का अभिभाषण

दिनांक 8 अक्टूबर 2023, रविवार	**समय : 4.30 PM**	**स्थान : श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र**

- असम के सांस्कृतिक विभाग के माननीय मंत्री श्री बमल बोरा जी,
- पर्यटन एवं जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के माननीय मंत्री श्री जयंत मल्ल बोरा जी,
- दिसपुर क्षेत्र से विधायक श्री अतुल बोरा जी,
- सिपाझाड़ क्षेत्र से विधायक डॉ. परमानंद राजवंशी जी,
- रॉयल ग्लोबल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अशोक पंसारी जी,
- सांस्कृतिक महासभा के अध्यक्ष श्री पवित्र कुमार शर्मा जी,
- महासचिव श्री प्रदीप कुमार बोरा जी,
- आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. हितेश बरुवा जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण
- महासभा के सम्मानित सदस्यगण
- मीडिया से हमारे मित्रों,
- देवियों और सज्जनों

नमस्कार!

मुझे सांस्कृतिक महासभा के पांचवें राज्य स्तरीय पुरस्कार समारोह में आप सबके बीच उपस्थित होकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह हमारे लिए सांस्कृतिक क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धियों और योगदानों के लिए व्यक्तियों को सम्मान करने का अवसर है। मैं इस कायर्क्रम में सम्मानित होने वाले सभी लोगों को बधाई देता हूं।

आज यहां असम की संस्कृति और कला का प्रतिबिंब कहे जाने वाले श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में वर्ष 2021-23 के लिए पांचवां राज्य स्तरीय पुरस्कार समारोह आयिजत हो रहा है। मैं इस समारोह की सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

मित्रों,

सांस्कृतिक महासभा, एक गैर-सरकारी, स्वैच्छिक, और सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन है, जिसने असम के विभिन्न जातीय समूहों की पारंपरिक लोक संस्कृति के उत्थान, प्रदर्शन, प्रसार और संरक्षण के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि महासभा के इन प्रयासों से वृहद असमिया संस्कृति के विकास के साथ-साथ समाज में एकता, सौहार्द और सद्भाव की डोर को और मजबूत बनाने में मदद मिलेगी।

मुझे खुशी है कि सांस्कृतिक महासभा ने आज इस समारोह में गीत-संगीत, नाट्य, चित्रकला और संस्कृति के क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्तित्वों के योगदान देने वाले महानुभावों का चयन कर उन्हें सम्मानित करने का निर्णय लिया है। इसके अलावा, स्थानीय स्तर पर सामाजिक गतिविधियों में शामिल लोहार, सुनार, राजमिस्त्री, शिल्पकार, कुम्हार, बुनकर और विभिन्न संगीत वाद्ययंत्र मरम्मत करने वाले कुशल व्यक्तियों, जिन्होंने समाज में कार्य-संस्कृति को बढ़ावा दिया है तथा देश की अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, को भी प्रसिद्ध कलाकारों के साथ सार्वजनिक रूप से एक ही मंच पर सम्मानित करने की सराहनीय पहल की है

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस पुरस्कार समारोह में 200 से अधिक लोगों को सम्मानित किया जाएगा, जिसमें 50 से अधिक हस्तियों को मानद उपाधि प्रदान की जाएगी और राज्य के विभिन्न जिलों से चयनित 150 से अधिक व्यक्तियों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

मुझे बताया गया है कि यह पुरस्कार समारोह हर दो वर्ष के अंतराल में आयोजित किया जाता है।

सांस्कृतिक महासभा ने पहली बार इस पुरस्कार समारोह की शुरुआत करते हुए असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष और गौहाटी विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. बीरेंद्रनाथ दत्ता को वर्ष 2011-13 का "सुधाकंठ डॉ. भूपेन हजारिका संस्कृत सम्मान पुरस्कार" प्रदान किया था। इसके बाद 2013-15 का यह सम्मान प्रसिद्ध लेखक, शोधकर्ता और श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र क्षेत्र के पूर्व उपाध्यक्ष श्री रत्ना ओझा को प्रदान किया।

इसके बाद असम साहित सभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. नगेन सैकिया को "सुधाकंठ डॉ. भूपेन हजारिका संस्कृत सम्मान पुरस्कार" 2015-17 के सम्मान से नवाजा गया। फिर 5 नवंबर 2022 को नलबाड़ी नाट्य मंदिर में आयोजित समारोह में सांस्कृतिक महासभा ने प्रसिद्ध सत्रीय नृत्याचार्य पद्मश्री जतिन गोस्वामी को 2017-19 और गायिका सुदक्षिणा शर्मा को 2019-21 का "सुधाकंठ डॉ. भूपेन हजारिका संस्कृत सम्मान पुरस्कार" प्रदान किया गया।

मुझे बताया गया है कि 2007-2008 में असम सरकार द्वारा आयोजित हाथी महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रम का सफल आयोजन करना सांस्कृतिक महासभा की उल्लेखनीय उपलब्धि में से एक है। इस कार्यक्रम में विभिन्न जिलों की सांस्कृतिक टीमों ने अपनी आकर्षक कला और संस्कृति का प्रदर्शन किया था।

इसी तरह 26 सितंबर 2010 को महासभा ने श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र में आकर्षक सांस्कृतिक बैठक का आयोजन किया, जिसमें डॉ. केशवानंद गोस्वामी, मूर्तिकार बीरेन सिंघा और पद्मश्री डॉ. सूर्या हजारिका उपस्थित थे। इस अवसर पर सदिया से लेकर धुबड़ी तक की विभिन्न सांस्कृतिक टीमों ने सत्रीय नृत्य, भोरताल नृत्य, बिहू, बगरुम्बा, ओइनितम सहित अन्य लोक नृत्यों का प्रदर्शन किया।

दीर्घकालिक प्रस्तावित कार्यक्रम के अंतर्गत महासभा ने ग्वालपाड़ा के बोलोदमारी, कामरूप ग्रामीण के लाह और श्रीहाटी, बोकाखात, जोरहाट, तिनसुकिया, डिगबोई, नौगांव, शिवसागर आदि में सांस्कृतिक बैठकों की एक श्रृंखला आयोजित की।

सांस्कृतिक महासभा, असम की शिवसागर जिला समिति ने शिवसागर के नवनिर्मित जिला पुस्तकालय के परिसर में "कलागुरु" विष्णु प्रसाद राभा और रूपकुंवर ज्योति प्रसाद अग्रवाल की दो प्रतिमाएं स्थापित की है।

मित्रों,

असम अपनी एक समृद्ध सांस्कृतिक पहचान रखने वाली भूमि है। असमिया संस्कृति विभिन्न जातीय और सांस्कृतिक समूहों की सांस्कृतिक को समेटे हुए है। प्रत्येक जातीय-सांस्कृतिक प्रणाली और उप-प्रणाली की अपनी अलग पहचान होती है जो भाषा, पारंपरिक शिल्प, लोककथाओं, त्योहारों, प्रदर्शन कलाओं, भोजन, साहित्य आदि के रूप में परिलक्षित होती है।

लेकिन, वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण, मीडिया का प्रसार और बेहतर संचार प्रक्रिया के कारण, संस्कृतियाँ अन्य लोकप्रिय संस्कृतियों से तेजी से प्रभावित हो रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप अंततः उनकी विशिष्टता कम हो रही है।

राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के पोषण और संरक्षण के अपने मिशन में, सरकार हर दिन नए प्रयास कर रही है। सांस्कृतिक मामलों का विभाग राज्य की जातीय, स्वदेशी जनजातियों और समुदायों की जीवित संस्कृति को संरक्षित करने का काम कर रहा है।

विभाग वैश्विक स्तर पर लोगों के बीच सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करने के साथ-साथ इस क्षेत्र में रोजगार पैदा करने के लिए लगातार काम कर रहा है। यह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए अनुकूल वातावरण बनाने पर भी जोर दे रहा है।

मुझे खुशी है कि सांस्कृतिक महासभा जैसी संस्थाएं असम की संस्कृति, कला एवं साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि असम की युवा पीढ़ी भी इससे प्रेरित होगी और असम की वृहद संस्कृति और कला को इसी तरह जीवंत और बरकरार रखेगी।

एक बार पुन:, मैं इस समारोह में सम्मानित होने वाले विशिष्ठ लोगों को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई देता हूं तथा उनके भावी प्रयासों के लिए अपनी शुभकामनाएं देता हूं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।